किशोर और युवाओं की परवरिश में चुनौतियाँ

अवंतिका शुक्ला
स्त्री अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

किशोरावस्था मानव जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण दौर होता है । हममें से ज्यादातर लोगों ने सुना होगा कि किशोरावस्था बहुत ही नाजुक उम्र होती है । बाल्यावस्था को छोड़कर युवावस्था में प्रवेश के बीच का यह संक्रमण काल किसी भी व्यक्ति के जीवन में बहुत ख़ास अहमियत रखता है । इसी उम्र में एक भावी नागरिक के व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया सबसे तेज हो जाती है । इस आयु की परवरिश जीवन को एक दिशा देने का कार्य करती है । यह असीम संभावनाओं से भरी आयु होती है, लेकिन उतनी ही विद्रोही भी । इन दोनों का संतुलन पालकों से बहुत धैर्य की मांग करता है, जो जीवन की विभिन्न स्थितियों को देखते हुए लोगों में बहुत कम हो रहा है । चारों तरफ हिंसा का जो आलम है, चाहें हमारे आस-पास की घटनाएँ हों, फिल्में हों, वीडियो गेम या अन्य मनोरंजन के साधन हों, हिंसा से भरपूर हैं । सोशल मीडिया ने असुरक्षा, आपसी वैमनस्य, भाषिक हिंसा को जो विस्तार दिया है, वह एक बड़ी समस्या और चुनौती के रूप में हमारे सामने आकर खड़ा है । ऐसे में अभिभावकों पर बच्चों की अच्छी परवरिश का एक बहुत बड़ा नैतिक दायित्व है । जितनी तेजी से वस्तुओं में बदलाव हो रहा है । हर एक नई चीज़ तुरंत पुरानी घोषित कर दी जा रही है । यूज एंड थ्रो की संस्कृति चरम पर है । एक अलग सी अफरातफरी मची है । गलाकाट प्रतिस्पर्धा का दौर चल रहा है । ऐसे में अपने बच्चे को हिंसा, नफ़रत से बचाते हुए उसके भविष्य की राह को प्रशस्त करना आसान नहीं है । नित नए झूठे प्रलोभन तैयार हैं, लोगों को निगलने के लिए । ऐसे में किशोरों या युवाओं को बचाकर उसे एक बेहतर मनुष्य और बेहतर नागरिक बनाना किसी जंग जीतने से कम नहीं है । यह तब और कठिन हो जाता है, जब बेरोजगारी के इस भयानक दौर में बच्चे की शिक्षा, ज्ञान, प्रतिभा सब एक अदद अच्छी नौकरी की ओर मोड़ देना इस दौर की बड़ी विवशता बन गई हो ।

बच्चे की परवरिश में माता-पिता दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । ऐसे में अगर बच्चा परिस्थितिवश माता या पिता किसी एक के साथ रह रहा हो, तो परवरिश की जिम्मेदारियां और चुनौतियां बहुत ज्यादा बढ़ जाती हैं । प्रस्तुत आलेख में किशोरों की परवरिश की चुनौतियों पर बात की गई है । इसमें खासकर उन माता-पिता की चुनौतियों को केंद्र में रखा गया है, जो दूरस्थ संबंधों में हैं अर्थात कामकाज के सिलसिले में अलग-अलग शहरों में रहते हैं और बच्चा किसी एक के पास रहता है ।

बच्चों के परवरिश की अधिकांश जिम्मेदारी माताओं की रही है । अनेकों परिवारों में पिता कमाने के लिए लंबे समय तक परिवार से दूर रहते हैं और उनकी कमाई से घर चलता आया है । लेकिन बच्चों के रोजमर्रा के जीवन में क्या हो रहा है?, वे किस प्रकार की संगतियों में हैं?, उनकी क्या जरूरतें हैं?, यह लंबे समय से माताओं के दायरे में ही रहा है । मां के साथ अधिकांश बच्चों के अनौपचारिक संबंध रहे हैं, जबकि पिता के साथ प्यार, सम्मान के साथ एक भय भी रहा है । माता-पिता दोनों ही बच्चे के व्यक्तित्व को निखारने में महती भूमिका अदा करते हैं पर अगर माता पिता दोनों दूर हैं तो उनके अपने बच्चों की परवरिश के प्रयास के लिए दुगुनी ताकत की आवश्यकता होती है, भले ही उसमें अपेक्षित सफलता न भी मिल पाए ।

भारत में स्त्री शिक्षा को लेकर बेहतरीन प्रयास किए गए हैं । तमाम सरकारी गैर-सरकारी प्रयासों से लंबे समय से यह प्रयास किया जाता रहा है कि समाज में जेंडरगत भेदभाव की जंजीरें टूटें और स्त्री-पुरुष समान वातावरण में सांस ले सकें । स्त्री-पुरुष समानता के रास्ते में आर्थिक आत्मनिर्भरता बहुत बड़ा मुद्दा है. इसी आत्मनिर्भरता के लिए महिलायें भी पुरुषों के सामान रोजगार के विविध क्षेत्रों में सक्रिय हुईं । ऐसी स्थिति में एक नए किस्म के परिवार का जन्म होता है, जिसमें मां अपने बच्चों के साथ रहकर अलग शहर में रोजगार कर रही है और पिता अलग शहर में अपने रोजगार के कारण है । इस स्थिति में बच्चों की परवरिश का मुद्दा बहुत अहम् हो गया है, खासकर किशोरों की परवरिश का ।

जब तक बच्चा छोटा है, वह अपनी रोजमर्रा की जरूरतों के अलावा अपनी मानसिक खुराक के लिए भी अपने पालक पर निर्भर होता है, लेकिन जब बच्चा धीरे-धीरे बड़ा होता है और किशोरावस्था में पहुंचता है, तब उसके दायरे का विस्तार हो जाता है, जिसमें पालक के अतिरिक्त शिक्षक, सहपाठी, मित्र, पड़ोसी, मीडिया, आस-पास के परिवेश आदि का भी गहरा प्रवेश हो जाता है । ऐसी स्थिति में उसकी समझ का दायरा उसके परिवेश से भी बनने लगता है । किए गए किसी कार्य से अच्छे या बुरे परिणाम की समझ किशोरों में विकसित होने में वक्त लेती है यह ऐसा समय है, जब बच्चा स्वयं को माता-पिता से ज्यादा आधुनिक और अपडेट मानने की शुरुआत करता है । उसे अपने दोस्त ज्यादा आधुनिक और समझदार लगते हैं, जिसके कारण उसका जुड़ाव दोस्तों से ज्यादा हो जाता है । बच्चे और माता-पिता के बीच यह समय

एक हल्की दूरी भी लेकर आता है । ऐसे समय में माता-पिता या पालकों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका हो जाती है और अगर बच्चा किसी एक के पास रह रहा हो तो उस माता-पिता या पालक की जिम्मेदारी कितनी बढ़ जाती होगी, इसका अनुमान लगाया जा सकता है । एक स्थानीय दूरी पहले से ही है और मन से मन की दूरी बनने की संभावनाएं उम्र के साथ बन रही हैं। इन दूरियों को पाटना अभिभावकों के लिए एक बड़ी चुनौती है ।

किशोर की परवरिश के समय बहुत सारे विचार और भय मन में चलते हैं. सबसे पहले उसकी शिक्षा का, भविष्य में उसके रोजगार की संभावनाओं का, किसी गलत सोहबत में न पड़ जाने का, महिलाओं के विरुद्ध हिंसक गतिविधियों में संलिप्तता का, नशे का, परिवार के साथ एक जुड़ाव रखने का आदि आदि । यह सभी बातें किसी भी माता-पिता के भीतर एक चिंता रखती हैं । किशोर की परवरिश में इस बात की ओर ध्यान देना बहुत आवश्यक है । किशोरों की परवरिश की आज सबसे बड़ी चुनौती उनके भीतर महिलाओं, लड़कियों के प्रति एक संवेदनशीलता पैदा करने की है । यह एक दिन में नहीं बनती बल्कि इसके लिए परिवार को सतत प्रयास करने होते हैं । बच्चों के मन में बचपन से ही स्त्री-पुरुष के बीच एक विभेद स्पष्ट हो जाता है और बालकों के मन में यह बात उनके समाजीकरण से गहरे पैठ जाती है कि लड़कियां लड़कों से कमजोर हैं । अतः उन्हें कोई भी ऐसा व्यवहार नहीं करना है जो किसी भी रूप में उन्हें लड़कियों जैसा बनाए । एक बार मैं अपने बेटे को पढ़ा रही थी । वह चौथी कक्षा में था शायद. उसकी एनसीईआरटी की एक पाठ्य पुस्तक में अभ्यास वाले हिस्से में विद्यार्थियों के लिए एक निर्देश दिया था- अब तुम चित्र बनाने के बाद इसमें रंग भरोगी. बेटे ने सारे अभ्यास कर लिए और चित्र बनाना और रंग भरना छोड़ दिया । जब उससे पूछा गया कि इसे क्यों छोड़ दिया, तो उसने कहा कि इसमें रंग भरोगी लिखा था । इसका मतलब यह काम सिर्फ लड़कियों को ही करना था इसीलिए मैंने नहीं किया । इस पर मैंने उसकी दूसरी पाठ्य पुस्तक का अभ्यास दिखाते हुए कहा कि इस पर लिखा है तुम सब इस प्रयोग को करोगे । तो क्या इस प्रयोग को तुम्हारी कक्षा की लड़कियों ने नहीं किया ? उसने कहा कि किया था । मैंने पूछा तब तुम्हें क्यों दिक्कत हुई, अगर वे कर सकती हैं तो तुम क्यों नहीं कर सकते? दरअसल इन पाठ्य पुस्तकों को जेंडर संवेदनशीलता के साथ तैयार किया गया था और पूरी पाठ्य पुस्तक में पुरुष केंद्रित भाषा के स्थान पर ऐसी भाषा का इस्तेमाल किया गया था, जिससे लड़के-लड़कियां दोनों आपने आपको उससे शामिल पाएं । इसीलिए इसमें भाषा का नया प्रयोग कई जगहों पर किया गया लेकिन इस घटना से यह बात सामने आई कि पुरुष केंद्रित भाषा भीतर तक इतना प्रभाव छोड़ चुकी है कि उसमें स्त्री-पुरुष दोनों शामिल मान लिए जाते हैं, जबकि स्त्री केंद्रित भाषा में सभी को शामिल करना अभी भी कठिन है । साथ ही यह घटना हमें यह भी बताती है कि भाषा का बच्चों के ऊपर एक ख़ास प्रभाव होता है, जिस पर हमें ध्यान देना होगा ।

एक बेटे की मां होने के नाते सबसे बड़ी जिम्मेदारी आती है कि उसकी परवरिश एक ऐसे माहौल में हो , जहां से वह जेंडर संवेदनशील बन सके । उसे इस बात का अहसास हो कि उसे परिवार के भीतर और बाहर की महिलाओं, लड़कियों के साथ एक संवेदनशीलता ताउम्र बरतनी है । जबकि उसके सामने फ़िल्में, कार्टून, धारावाहिक, वीडियो गेम्स, सोशल मीडिया आदि एक ऐसी दुनिया रच रहे हैं, जो उसके भीतर महिलाओं को लेकर एक असंवेदनशील दृष्टि फैला सकती है । ऐसी स्थिति में यह बहुत आवश्यक हो जाता है कि एक किशोर के रूप में इन सभी में प्रस्तुत कंटेंट की जेंडर असंवेदनशीलता पर उससे बात होती रहे ताकि उसे समझ में आए कि यह सामग्री महिलाओं के बारे में कैसी दोयम दर्जे की सोच को सामने लेकर आ रही हैं । और इन बातों से अपनी सोच किस प्रकार बचाने की आवश्यकता भी है । मीडिया के तमाम साधन किशोरों के भीतर एक हिंसक मर्दानगी का विकास कर रहे हैं । तमाम वीडियो गेम्स इसका उदाहरण हैं, जो मोबाईल के माध्यम से बच्चों के पास सुलभ हैं । माता-पिता के तमाम नियंत्रण के बाद भी हिंसक फिल्मों, गेम्स से बच्चे बच नहीं पा रहे हैं । बड़े से बड़े हिंसक दृश्य को देखकर उनके मुंह पर एक शब्द बहुत आराम से आ जाता है, कितना कूल कैरेक्टर है या कितना कूल सीन है । हिंसक दृश्यों के प्रति बच्चों में यह नजरिया बहुत आम है, यह बताता है कि वे हिंसा में आनंद लेना सीख रहे हैं । ऐसे भी तमाम गेम उपलब्ध हैं, जो महिलाओं के विरुद्ध हिंसा से भरे हुए हैं । आज परिवार में स्त्री-पुरुष दोनों काम पर जा रहे हैं, एकल परिवार हैं । जहां संयुक्त परिवार हैं, वहां भी बच्चों के मोबाईल के भीतर चल रही दुनिया का ज्ञान परिवारजनों को कम ही हो पाता है । बच्चों के साथ लंबी बातचीत करने का, उनके साथ विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने का समय लोगों के पास कम होता जा रहा है । घरों में अकेले रहना, सोशल मीडिया, कोरोना, लाकडाउन, पढ़ाई के दबाव आदि ने किशोरों को अपने आप में भी सीमित किया है. माता-पिता दोनों के कामकाजी होने के कारण एक बच्चे का चलन बढ़ा है । ऐसी स्थिति में माता-पिता के साथ अपने विचारों को खुलकर साझा न कर पाने के कारण उनके बीच उठते तमाम सवालों के जबाव नही मिल पाते और वे इंटरनेट की दुनिया में अपने जबाव ढूँढते हैं । इस दुनिया में उन्हें ज्यादातर जबाव से ज्यादा उलझाव मिलते हैं । इंटरनेट के माध्यम से किशोरों की पोर्न तक बहुत सहज पहुँच हो जाती है । कई बार अनायास ही स्क्रीन पर या सोशल मीडिया एकाउंट पर उत्तेजक संदेश, तस्वीरें, गेम्स भी आ जाते हैं और अगर गलती से या जिज्ञासावश उस पर क्लिक कर

दिया जाए तो उसके बाद लगातार यह सिलसिला बन जाता है और इसके जाल में किशोर क्या युवा भी फंसते चले जाते हैं । यह स्थिति तब और गंभीर हो जाती है, जब उनके घरों या आसपास का वातावरण भी हिंसक हो । हमारे समाज में हिंसा के विविध रूप व्याप्त हैं । परिवारों में महिलाओं के विरुद्ध हिंसा किसी से छिपी नहीं है । सांप्रदायिकता, जातिगत, वर्गगत भेदभाव भी परिवार और समाज में हिंसा को बढ़ावा देता है । इंटनेट की दुनिया से उपजी हिंसा इसके साथ मिलकर कोढ़ में खाज का काम करती है और एक हिंसक व्यक्तित्व का विकास किशोर में करती है । ऐसे समय में परिवार को बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है । किशोरों के बीच संवेदनशीलता का विकास बहुत आवश्यक है और यह तभी संभव है, जब पारिवारिक वातावरण में एक संवेदनशीलता देखने को मिलेगी । अगर घरों में महिलाओं के विरुद्ध हिंसा चलती रहेगी तो मान के चलिए इस दुर्गुण को किशोर भी अपनाएंगे ही और इसका इस्तेमाल वे घर में या बाहर किसी न किसी रूप में करेंगे ।

जब बच्चा मां या पिता किसी एक के साथ ही रह रहा हो, तब अभिभावकों की जिम्मेदारी बढ़ती है । बच्चों को दोनों की जरूरत होती है. ऐसे में बच्चों के भीतर यह विश्वास भरना बहुत आवश्यक होता है कि हम भले ही जगह से दूर रह रहे हैं, पर तुमसे नहीं । बच्चों के हर विकास के बारे में जानकारी रखकर और उनकी तमाम गतिविधियों पर बात करते हुए यह निकटता बनानी जरूरी है । जो व्यक्ति बच्चे के साथ रह रहा है, उसे मानसिक रूप से ज्यादा मजबूत भूमिका में आना हो, ताकि बच्चे के भीतर किसी तरह की असुरक्षा न पनपे । अपने एक प्रोजेक्ट के सिलसिले में मैंने उन महिलाओं के साक्षात्कार लिए जो रोजगार के सिलसिले में अपने पति से अलग रह रही हैं । उन माओं पर अपने बच्चों की परवरिश की भी जिम्मेदारी है । उनमें से एक महिला ने बताया के उनकी किशोर बेटी ज्यादा उग्र व्यवहार करती है । मां के साथ अकेले रहने के कारण उसका सामाजिक दायरा बहुत सीमित है । मां अकेले रहने के कारण लोगों की अजीब नज़रों का सामना करती है । सामाजिक समारोहों में भी अकेले रहकर नौकरी करने के ताने सुनती रहती है । इसलिए मां कम से कम समारोहों में जाना पसंद करती है । छोटे शहर में रहकर रोजगार करने वाली मां अपनी और बेटी की सुरक्षा के लिए एक सीमित दायरे में ही रहती है । बेटी को यह बात बहुत अखरती है कि उनका सामाजिक दायरा, सामाजिक संबंध पिता की तुलना में बहुत सीमित है । उसकी बाकी सहेलियों की तुलना में उसका जीवन ज्यादा बंद है । जब उसके पिता आते हैं, तब उनका लोगों के साथ मिलना, जुलना, बाहर घूमना फिरना शुरु होता है । बाकी समय वे दोनों खुद को घर, पढ़ाई और कामकाज तक ही सीमित रखते हैं । इस पर उसका गुस्सा कई बार उसकी मां पर उतरता है क्योंकि वह अकेले अपने सन्नाटे भरी जिंदगी के साथ तालमेल नहीं बिठा पा रही है । ऐसी स्थितियों से तमाम एकल कामकाजी महिलाएं रुबरु होती हैं । कई बार बच्चे खासतौर पर मां के संकटों को नहीं समझ पाते इसलिए एक ओर बच्चों की परवरिश के दौरान मां के कैरियर, उसकी जरूरतों के बारे में बच्चों के साथ चर्चा आवश्यक है, वहीं मां को भी अपने डर से मुक्त होने की कोशिश लगातार करनी होगी । उसे इस बात का अहसास कराना होगा कि मां के बाहर काम करने को वह अपने जीवन के अभाव के रूप में नही बल्कि शक्ति के रूप ले । इस मजबूती का अहसास बेटी को तभी होगा, जब मां स्वयं को कमजोर और अभावग्रस्त न माने और सशक्त तरीके से इस स्थिति का सामना करे । तभी वह बेटी के भीतर भी मजबूती भर पाएगी । ऐसे ही एक और साक्षात्कार में एक बेटे की अधिकारी मां अपने बेटे को ज्यादा संवेदनशील पाती है क्योंकि वह देखती है कि उसकी मेहनत, आत्मविश्वास और संघर्षों को देखकर बेटे के मन में महिलाओं के प्रति एक ख़ास सम्मान दिखता है । फिर भी किशोरावस्था में बच्चों के भीतर होने वाले शारीरिक, मानसिक बदलाव उनके व्यवहार को कई बार काफी प्रभावित करते हैं । वे अपने भीतर हो रहे बदलावों को ठीक से समझ नहीं पा रहे होते हैं, उसी समय उनके सामने बोर्ड परीक्षाओं का हौआ भी खड़ा कर दिया जाता है । शारीरिक परिवर्तन से वे बड़ों जैसे दिखाते तो हैं, पर वे वास्तव में नाजुक के बच्चे ही होते हैं । उनसे परिवार की अपेक्षाएं बढ़ती हैं, जबकि इस समय वे खुद को ही जानने समझने की कोशिश में लगे होते हैं । ऐसी स्थिति में कई बार माता-पिता को लगता है कि उनका बच्चा उन्हें सुन नहीं रहा, अपनी जिम्मेदारियों को समझ नहीं रहा, समझदारी भरा व्यवहार नहीं कर रहा । जबकि बच्चे को लगता है कि माता-पिता उसे समझ ही नहीं पा रहे हैं । दूसरी तरफ वह किशोर खुद को भी ठीक से नहीं समझ पा रहा है । ऐसे में बच्चा माता-पिता से भागता है ।

बच्चों और पालकों के बीच किशोरावस्था में आयी दूरी को पाटना बहुत जरूरी है और यह तभी संभव होगा जब हम बच्चे से हर मुद्दे पर खुलकर बात करने की स्थिति में हों । किशोर बहुत तार्किक होते हैं, तमाम बातों को तर्कों की कसौटी पर कसकर देखना चाहते हैं । जो बातें तर्क पर ठीक न बैठें उन्हें वे नहीं मानना चाहते । ऐसी स्थिति में जबरदस्ती करने से ज्यादा बच्चों के साथ चर्चा करना महत्वपूर्ण होता है । उन्हें उनके स्तर पर जाकर समझाना एक धैर्य की मांग करता है । अगर वह हमारे पास है, तो अपने किशोर बच्चों के साथ एक दोस्ताना रिश्ता बनता जाता है । उनकी दुनिया से जुड़ना, उनकी पसंद की फ़िल्में, संगीत, बातें आपको एक नयी ऊर्जा और जिजीविषा देती हैं । कई बार तो किशोर आपके दोस्तों जैसे ही मददगार भी होते हैं । वे आपकी परेशानियों और जटिलताओं को भी समझने की कोशिश करते हैं । आपके

साथ खड़े होते हैं, पर यह तभी संभव होता है, जब आप यह स्पेस रखते हैं कि किशोरों की कमियों को आप तार्किक रूप से समझने की कोशिश करेंगे और उन्हें बेहतर करने के लिए आप उनके साथ एक मित्रवत व्यवहार रखेंगे । लेकिन इस मित्रवत व्यवहार में किशोरों के आचरण को लेकर एक अनुशासन अत्यंत आवश्यक है ।

इस आलेख के अंत में मैं कहना चाहती हूँ कि आज के किशोर नई से नई जानकारियों से लबरेज हैं, तार्किक हैं, लेकिन उनके भीतर एक सहमा सा बच्चा भी है, जो बड़ों की दुनिया में खुद की जगह बनाने, पहचान बनाने, खुद को साबित करने जैसे संघर्षों से जूझ रहा है. कई बार वो जल्दी से बड़ा होना चाहता/चाहती है ताकि वह खुद को ताकतवर महसूस कर पाए, प्रभावशाली महसूस कर पाए जैसा कि वह अपने आस-पास के बड़े लोगों को देखता है । इसके लिए कई बार वह अनुचित साधनों, बातों का भी इस्तेमाल कर लेता है, जिसके परिणाम का उसे अंदाजा भी नहीं होता है । किशोर के भीतर एक नन्हा बच्चा भी होता है, जो अपने माता-पिता का ज्यादा से ज्यादा प्यार और सपोर्ट चाहता है, जैसा कि उसे बचपन में मिलता था, बिना किसी के दबाव या जिम्मेदारी के । बच्चा वास्तव में वैसा ही बनता जाता है, जैसे कि हम खुद होते हैं । बच्चे का रोल मॉडल बनने के लिए हमें किशोर की परवरिश के साथ अपने व्यवहार पर भी बहुत ज्यादा ध्यान देना होगा ।

दूसरी बात अगर आप बच्चे के जीवन में रुचि ले रहे हैं, उसकी समस्याओं को सुन रहे हैं, उसके साथ दोस्ताना रिश्ते में हैं, उसे आप पर विश्वास है, तब यह मायने नहीं रहता कि आप उसके साथ अकेले हैं या दूर हैं. आप उसे यह अहसास कराते हैं कि हर आप हर पल उसके साथ हैं ।